साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 6 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 4 फरवरी 2026 से 10 फरवरी 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

गंगा में सीवेज प्रदूषण की रोकथाम के लिए स्वीकृत परियोजनाओं में 40 फीसदी का काम बाकी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार भले ही नमामि गंगे कार्यक्रम को गंगा की सफाई में महत्वपूर्ण सफलता के तौर पर पेश कर रही हो, लेकिन केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के हालिया आंकड़े बताते हैं कि नदी की जल गुणवत्ता में सुधार असमान और आंशिक रहा है। विशेषकर उत्तर प्रदेश और बिहार के कई हिस्सों में जैव-रासायनिक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) अब भी तय मानकों से अधिक पाई गई है।

जैव-रासायनिक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) वह मात्रा है जो जल में मौजूद जैविक पदार्थों को अपघटित करने के लिए सूक्ष्मजीवों द्वारा आवश्यक घुलित ऑक्सीजन को दर्शाती है। जल शक्ति मंत्रालय के अनुसार, नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक 35,698 करोड़ रुपये की लागत से 218 सीवरेज अवसंरचना परियोजनाएं स्वीकृत की गई हैं। इनमें से 6,610 एमएलडी क्षमता के सीवेज शोधन संयंत्रों (एसटीपी) की योजना है, लेकिन अब तक केवल 3,977 एमएलडी क्षमता वाले 138 एसटीपी ही चालू हो पाए हैं। यानी लगभग 40 प्रतिशत क्षमता अभी भी कागजों या निर्माणाधीन स्थिति में है। यह सूचना 2 फरवरी, 2026 को जल शक्ति राज्यमंत्री राज भूषण चौधरी द्वारा राज्यसभा में लिखित प्रश्न के उत्तर में प्रदान की गई है। सूचना के मुताबिक, सीपीसीबी की 2018 और 2025 की रिपोर्टों की तुलना के अनुसार, गंगा के मुख्य प्रवाह में प्रदूषित नदी खंडों (पीआरएस) की संख्या कुछ राज्यों में घटी है। उत्तराखंड में हरिद्वार से सुल्तानपुर तक के प्रदूषित खंड हटाए गए हैं, जबकि पश्चिम बंगाल में त्रिवेणी से डायमंड हार्बर के हिस्से में सुधार दर्ज किया गया है। हालांकि, उत्तर प्रदेश में कन्नौज से वाराणसी तक का प्रदूषित खंड 2018 में जहां प्राथमिकता-IV में था, 2025 में यह बिजनौर से तारीघाट तक फैलकर प्राथमिकता-ढ्ढङ्क/ङ्क में दर्ज किया गया है, जिसे सरकार खुद आंशिक सुधार मानती है। वहीं, बिहार में बक्सर से भागलपुर का हिस्सा अब भी प्रदूषण की श्रेणी में बना हुआ है, जहां केवल मामूली सुधार दर्ज किया गया है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 2025 (जनवरीङ्कअगस्त) के दौरान गंगा के सभी निगरानी स्थलों पर पीएच और घुलित ऑक्सीजन (डीओ) स्नान मानकों के अनुरूप पाए गए। लेकिन बीओडी, जो जैविक प्रदूषण का सबसे अहम संकेतक है, उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद से कानपुर, रायबरेली, मिर्जापुर और गाजीपुर जैसे इलाकों में तय मानकों से बाहर रहा। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक बीओडी नियंत्रित नहीं होती, तब तक नदी के स्वस्थ होने के दावे अधूरे रहेंगे, क्योंकि यही संकेतक बताता है कि नदी में जैविक कचरा कितना मौजूद है। वर्ष 2024-25 में गंगा और उसकी सहायक नदियों के 50 स्थानों पर की गई जैव निगरानी में जैविक जल गुणवत्ता 'अच्छी' से 'मध्यम' के बीच आंकी गई। नदियों या झीलों के तट से जुड़े रहने वाले बेंथिक मैक्रो-इनवर्टेब्रेट प्रजातियों यानी रीढ़-रहित जलीय जीव (कीटों के लार्वा, घोंघे, केंचुए और छोटे क्रस्टेशियन) की मौजूदगी को सकारात्मक संकेत बताया गया है, लेकिन यह भी दर्शाता है कि नदी की पारिस्थितिकी अभी पूरी तरह बहाल नहीं हुई है। सरकार ने एक बार फिर दोहराया है कि नदियों की सफाई की प्राथमिक जिम्मेदारी राज्य सरकारों, स्थानीय निकायों और उद्योगों की है। केंद्र सरकार वित्तीय और तकनीकी सहायता तक सीमित है। यही कारण है कि एक समान राष्ट्रीय कार्यक्रम के बावजूद परिणाम राज्यों में अलग-अलग दिखाई देते हैं। नमामि गंगे और राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के तहत जन जागरूकता अभियानों, गंगा उत्सव, रन और सोशल मीडिया अभियानों पर जोर दिया गया है। लेकिन पर्यावरणविदों का कहना है कि बिना सीवेज प्रबंधन, औद्योगिक निगरानी और दंडात्मक कार्रवाई के, जागरूकता अभियानों का असर सीमित रहेगा।

प्राकृतिक खेती में रीवा का नाम रोशन करने में किसान आगे आयें-उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

अटल सेवा सदन का किया लोकार्पण

भोपाल उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि प्राकृतिक खेती में रीवा का नाम रोशन करने में किसान आगे आयें। स्वयं एवं परिवार के स्वास्थ्य के साथ जमीन के स्वास्थ्य के लिये प्राकृतिक खेती को अपनायें। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ग्राम पंचायत मरहा में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किसान सम्मेलन में शामिल हुए। उन्होंने 37.50 लाख रूपये की लागत से निर्मित पंचायत भवन (अटल सेवा सदन) का लोकार्पण किया। उन्होंने मरहा में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करने की घोषणा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि किसान भाई बसामन मामा गौवंश वन्य विहार का भ्रमण करें। वहां प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केन्द्र में प्राकृतिक खेती के गुर सीखें। अपनी कृषि भूमि में से कुछ भाग में इसे अवश्य अपनाये, इससे आने वाली पीढ़ी को भी लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि बसामन मामा के प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केन्द्र की केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी सराहना की है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भी गत वर्षों में रीवा के अपने भ्रमण के दौरान प्रस्तुत धरती माता की पुकार नाटिका के मंथन को गंभीरता से देखा था और अपेक्षा की थी कि किसान प्राकृतिक खेती अपनायें। रीवा जिले में प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये गये हैं। बसामन मामा, हिनौती गौधाम व हरिहरपुर में प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण केन्द्रों में आसपास के किसानों को लाभ मिलेगा।

जलवायु संकट- तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों से हो रही जैव विविधता की हानि

मुंबई। पेड़ पृथ्वी पर जीवन के लिए बेहद जरूरी हैं। वे हवा से कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) अवशोषित करते हैं और हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। पेड़ जानवरों, पक्षियों, कीड़ों और फसलों के लिए जीवन का आधार हैं। इनके जड़ें मिट्टी को बनाए रखती हैं और जल प्रणाली को संतुलित करती हैं। इसके अलावा, पेड़ लकड़ी, फल, छाया और मनोरंजन जैसी सुविधाएं भी प्रदान करते हैं।

लेकिन आज हमारे जंगलों पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। जलवायु परिवर्तन, जंगलों के काटे जाने और मानवजनित गतिविधियों के कारण जंगल तेजी से बदल रहे हैं। हाल ही में नेचर प्लांट्स नामक पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में 31,000 से अधिक पेड़ों की प्रजातियों का विश्लेषण किया गया। इसमें पता चला कि जंगल अब पहले जैसे विविध नहीं रह गए हैं। तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियां जंगल में अधिक हो रही हैं, जबकि धीरे बढ़ने वाली और विशेष प्रजातियां कम हो रही हैं। जैव विविधता कम होने से जंगल कमजोर हो रहे हैं और उनका सीओ2 जमा करने की क्षमता घट रही है। जलवायु परिवर्तन, जंगलों के काटे जाने और मानवजनित गतिविधियों से जंगल एकरूप होते जा रहे हैं, धीरे बढ़ने वाले पेड़ गायब हो रहे हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, सबसे खतरे में वे पेड़ हैं जो धीरे बढ़ते हैं और जिनकी जीवन शैली विशेष होती है। इन पेड़ों की पत्तियां मोटी और लकड़ी घनी होती है। ये लंबे समय तक जीवित रहते हैं और जंगल की स्थिरता बनाए रखते हैं। ये पेड़ कार्बन संग्रह करने, प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने और पूरे जंगल की जैविक संरचना को बनाए रखने में मदद करते हैं। इनके बिना जंगल कमजोर और अस्थिर हो जाते हैं। वहीं, तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियां जल्दी बढ़ती हैं लेकिन कमजोर होती हैं। इनकी पत्तियां हल्की और लकड़ी कम घनी होती है। उदाहरण के लिए, अकेसिया, पॉपलर, पाइन और युकलिप्टस जैसी प्रजातियां तेजी से बढ़ती हैं। ये पेड़ सूखे, तूफान और कीटों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए जंगल की स्थिरता और लंबे समय तक सीओ2 संग्रह करने की क्षमता पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन में यह भी पता चला कि लगभग 41 प्रतिशत ऐसे पेड़ हैं जो किसी क्षेत्र में प्राकृतिक रूप से नहीं पाये जाते, लेकिन अब वहां जंगली रूप से उग रहे हैं। ये पेड़ अक्सर तेजी से बढ़ते हैं और बिगड़े हुए वातावरण में अच्छी तरह पनपते हैं। हालांकि ये स्थानीय पेड़ प्रजातियों के समान भूमिका नहीं निभाते। ये स्थानीय पेड़ों के लिए संसाधनों पर दबाव डालते हैं और उनकी संख्या को और कम कर सकते हैं। विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय क्षेत्र इस बदलाव से सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं। यहां कई धीमे बढ़ने वाली पेड़ प्रजातियां सीमित क्षेत्रों में पाई जाती हैं। यदि ये प्रजातियां गायब हो गई, तो उनका स्थान किसी अन्य पेड़ नहीं ले सकता। इसका अर्थ है कि जंगल की जैव विविधता कम होगी और पारिस्थितिकीय संतुलन बिगड़ेगा। शोध के अनुसार, यह बदलाव मुख्य रूप से मानवजनित गतिविधियों के कारण हो रहा है। इनमें जलवायु परिवर्तन, पेड़ों के काटे जाने और जंगलों का विनाश अंधाधुंध कृषि और औद्योगिक गतिविधियां, पेड़ों की प्रजातियों का वैश्विक व्यापार आदि शामिल हैं। तेजी से बढ़ने वाले पेड़ अक्सर आर्थिक रूप से फायदेमंद होते हैं, क्योंकि ये जल्दी लकड़ी और बायोमास देते हैं। लेकिन ये पर्यावरणीय रूप से कमजोर होते हैं और बीमारियों के प्रति संवेदनशील होते हैं।

वन्य जीव और मनुष्य के बीच सह अस्तित्व की भावना विकसित करने में वनकर्मियों की भूमिका सराहनीय -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (एजेंसी)मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के वन विभाग की गतिविधियों और प्रगति की सराहना करते हुए कहा कि कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों की पुनर्स्थापना वन विभाग की दक्षता से ही संभव हो पाया है। चंबल में घड़ियाल और नर्मदा जी में मगरमच्छ स्वछंद विचरण के लिये छोड़ने का अनुभव अद्भुत रहा। वन वन्य जीव और क्षेत्रीय रहवासियों के बीच सह अस्तित्व की भावना का विकास वन विभाग की सेवाओं से ही संभव हो पाया। राज्य सरकार असम से वन्य जीवों को लाने के लिए प्रयास कर रही है। वन्य जीवों के संरक्षण में प्रदेश की जल संरचनाओं की भी बड़ी भूमिका है। वन विभाग की गतिविधियों का विस्तार नभ, थल, जल सभी ओर है। आईएफएस मीट प्रोफेशनल संवाद के साथ ही पारिवारिक आतमीयता और सहयोगी संबंधों को मजबूत करने का भी अवसर है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को आरसीव्हीपी नरोन्हा प्रशासन अकादमी में वानिकी सम्मेलन एवं आई.एफ.एस. मीट-2026 के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वन विभाग के आई.एफ.एस. थीम सॉन्ग तथा उसके वीडियो प्रसारण का लोकार्पण भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारतीय वन सेवा के सेवानिवृत्ति अधिकारी और प्रदेश के पूर्व पीसीसीएफ श्रद्धेय डॉ. पी.बी. गंगोपाध्याय को प्रदेश के वनों की सुरक्षा और बेहतरी में उनके योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड-2026 प्रदान किया। यह अवार्ड डॉ. गंगोपाध्याय की पत्नी श्रीमती गौरी गंगोपाध्याय ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री दिलीप सिंह अहिरवार, अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल एवं वन अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रदेश में आईएएस, आईपीएस एवं अब आईएफएस मीट का आयोजन एक सराहनीय प्रयास है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से विभाग के वर्तमान अधिकारी अपने वरिष्ठ अधिकारियों से बहुत कुछ सीखते हैं। भारतीय संस्कृति में वनों के साथ हमारा विशेष संबंध है। सनातन संस्कृति के 4 आश्रमों की व्यवस्था में गृहस्थ के बाद हम वानप्रस्थ आश्रम में वनों की महत्ता को समझते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे वन अधिकारी-कर्मचारी जंगलों के आसपास रहने वाले ग्रामीण परिवारों के लिए एक प्रकार से सहयोगी और मार्गदर्शन के रूप में भी काम करते हैं। वन विभाग के अधिकारी वनग्रामों के लिए सभी जरूरी सुविधाओं का ध्यान रखते हैं। प्रदेश में वन्य जीवों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय अभयारण्य के कोर एरिया और बफर जोन के बीच तार फेंसिंग की शुरुआत सराहनीय है। इससे वन्य जीवों के साथ रहवासियों को भी सुरक्षित वातावरण मिलेगा। प्रदेश सरकार वन विभाग के अधिकारियों के कल्याण के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री वी.एन. अंबाडे ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा शुरू की गई अविरल नर्मदा योजना के अंतर्गत नर्मदा बेसिन में 5000 हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र में नदी पुनर्भरण एवं पौध-रोपण के कार्य किए जा रहे हैं। पिछला वर्ष मध्यप्रदेश वन विभाग के लिए सामुदायिक सहभागिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। विभाग द्वारा प्रति वर्ष 5 करोड़ से अधिक पौधों का रोपण किया जाता है। रातापानी अभयारण्य को डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के नाम पर टाइगर रिजर्व घोषित किया गया है। आने वाले वर्षों में वन संरक्षण एवं पौधारोपण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। वन विभाग के फॉरेस्ट गार्ड श्री जगदीश अहिरवार के प्रयास को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने %मन की बात% कार्यक्रम में सराहा है। उन्होंने 125 दुर्लभ वन औषधियों का संकलन करने का कार्य किया है। पर्यावरण संरक्षण को समाज के प्रयासों के साथ भी जोड़ा जा रहा है। मध्यप्रदेश के वन हमारी राष्ट्रीय धरोहर है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ भारतीय वन सेवा के अधिकारियों का समूह चित्र भी लिया गया।

हिमालय राज्यों में आपदाओं से निपटने के लिए बजट में प्रावधान नहीं- हिमालय नीति अभियान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण से जलवायु परिवर्तन की मार से जूझ रहे हिमालयी राज्यों के लिए विशेष बजट की मांग करने वाले हिमालय नीति अभियान ने केंद्रीय बजट 2026-27 से निराशा जाहिर करते हुए कहा है कि आपदाओं से निपटने के लिए इस बजट में कोई विशेष प्रावधान नहीं किया गया है।

हिमालय नीति अभियान के संयोजक गुमान सिंह का कहना है कि बजट में हिमाचल, जम्मू कश्मीर और उत्तराखंड में जो सस्टेनेबल माउंटेन टूरिज्म ट्रेल्स की बात की गई है। वह असल में क्या है और इसका पर्यावरणीय व दूसरे क्या प्रभाव होंगे, उस पर पूरी जानकारी होने के बाद विचार किया जा सकता है द्य दूसरी घोषणा हिमालय क्षेत्र में अखरोट, बादाम और चिलगोजे की खेती को बढ़ाने की है जो एक बड़ा मजाक के अतिरिक्त कुछ नहीं है द्य उनका सवाल है कि क्या यह बजट पहाड़ी राज्यों की भूमि को टूरिज्म व अन्य बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण की लिए उपयोग की शुरुआत है द्य गुमान सिंह के अनुसार, भारत-न्यूजीलैंड टैरिफ समझौते के बाद सेब की फसल की कीमतें गिरेंगी। यूरोपीय यूनियन के साथ समझौते के बाद खेती और कृषि बीज संबंधी कानून आ रहे हैं द्य ऐसे में हिमाचल के सेब व अन्य फल उत्पादकों और किसानों के हितों की रक्षा कैसे होगी द्य उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के लिए यह बजट निराशाजनक रहा। स्पेशल कैटिगरी स्टेट के लिए रेवेन्यू डेफिसिट ग्रांट (आरडीजी) का जो प्रावधान 75 वर्षों से था, उसे 16वें वित्त आयोग ने समाप्त कर दिया गया है, जिससे प्रदेश को हर वर्ष लगभग 10,000 करोड़ रुपए का नुकसान होगा। हिमालय नीति अभियान की ओर से केंद्रीय वित्त मंत्री को पत्र लिखकर हिमालय क्षेत्र के लिए विशेष बजट प्रावधान करने के लिए अनुरोध किया गया था ताकि जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदाएं से हो रहे नुकसान से निपटा जा सके। वित्तमंत्री को भेजे पत्र में कहा गया था कि हिमालय क्षेत्र में बादल फटना, अचानक बाढ़, भूस्खलन, ग्लेशियर झील फटने से बाढ़ (ग्लोफ), जंगल की आग, भूकंप और जलवायु परिवर्तन के कारण पानी की कमी से भारतीय हिमालयी राज्यों में जीवन, आजीविका, बुनियादी ढांचे और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को बुरी तरह प्रभावित किया है। इस क्षेत्र की पारिस्थितिक संवेदनशीलता और भौगोलिक स्थिति को देखते हुए केंद्रीय बजट में विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र के लिए विशेष और सुरक्षित प्रावधानों की तत्काल आवश्यकता है, आपदाओं की रोकथाम, तैयारी, प्रतिक्रिया, पुनर्वास और दीर्घकालिक लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।

सेंधवा की स्वच्छता यात्रा- जर्मन सहयोग से बदली नगरीय जीवन की तस्वीर

भोपाल एक समय था जब सेंधवा नगर में सीवरेज की समुचित व्यवस्था का अभाव जनस्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए चुनौती बना हुआ था। बढ़ती जनसंख्या, अनियोजित अपशिष्ट निस्तारण और जल स्त्रोतों पर बढ़ता दबाव नगर के सतत विकास में बाधा बन रहे थे। ऐसे समय में जर्मन विकास बैंक केएफडब्ल्यू के सहयोग से शुरू की गई सेंधवा सीवरेज परियोजना ने नगर की तस्वीर ही बदल दी।

नगरीय विकास एवं आवास विभाग के उपक्रम मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी (एमपीयूडीसी) द्वारा क्रियान्वित यह परियोजना आज नगरीय स्वच्छता और आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण की एक सफल मिसाल बन चुकी है। एमपीयूडीसी के प्रबंध संचालक श्री संकेत भोंडवे ने बताया कि सेंधवा नगर की वर्तमान जनसंख्या लगभग 66 हजार है, लेकिन परियोजना की योजना वर्ष 2047 में अनुमानित 90,300 जनसंख्या की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई।उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल वर्तमान समस्या का समाधान नहीं था, बल्कि आने वाले दशकों के लिए एक टिकाऊ और वैज्ञानिक सीवरेज व्यवस्था विकसित करना था, जो जनस्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों की रक्षा कर सके। लगभग 18 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले सेंधवा नगर में 90.55 किलोमीटर लंबा सीवर नेटवर्क बिछाया गया। 66.26 करोड़ रुपये की निर्माण लागत और 80.99 करोड़ रुपये (संचालन-संधारण सहित) की कुल लागत वाली इस परियोजना के तहत 8.50 एमएलडी क्षमता का अत्याधुनिक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किया गया है, जो एसबीआर तकनीक पर आधारित है और अपशिष्ट जल का प्रभावी उपचार सुनिश्चित करता है। इसके अतिरिक्त, परियोजना में 7.60 एमएलडी क्षमता का इंटरमीडिएट पंपिंग स्टेशन और 0.428 एमएलडी क्षमता का लिफ्टिंग पंपिंग स्टेशन भी शामिल है, जिससे सीवरेज प्रणाली सुचारु रूप से संचालित हो रही है। सफलता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है ङ्क नागरिकों तक सीधी पहुंच। परियोजना के माध्यम से 12,346 घरों को सीवरेज कनेक्शन प्रदान किए गए हैं। इसके लिए 3,943 हाउस चेंबर और 3,338 मैनहोल का निर्माण किया गया, जिससे नगर का एक बड़ा हिस्सा सुरक्षित सीवरेज व्यवस्था से जुड़ सका। प्रबंध संचालक श्री संकेत भोंडवे ने बताया कि सेंधवा सीवरेज परियोजना केवल पाइपलाइन

और प्लांट तक सीमित नहीं है। यह लोगों के बेहतर स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण और सम्मानजनक नगरीय जीवन की दिशा में एक ठोस कदम है। इस परियोजना के परिणामस्वरूप खुले नालों में बहने वाले गंदे पानी में कमी आई है, जल स्त्रोत सुरक्षित हुए हैं और स्वच्छता के प्रति नागरिकों में जागरूकता बढ़ी है। इससे शहर की जीवन गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिल रहा है। जर्मन बैंक केएफडब्ल्यू के अंतरराष्ट्रीय सहयोग से विकसित यह परियोजना आज मध्यप्रदेश में आधुनिक नगरीय सीवरेज प्रबंधन का अनुकरणीय मॉडल बन गई है।

यमुना में जैवविविधता पर संकट-बढ़ रहा विदेशी प्रजातियों की मछलियों का प्रसार, एनजीटी ने प्रमुख राज्यों को दिया कदम उठाने का आदेश

नई दिल्ली। यमुना नदी की गिरती जैव विविधता पर चिंता जताते हुए नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने स्वतः संज्ञान लेते हुए नदी में देशी मछलियों की बहाली और विदेशी मछली प्रजातियों के प्रसार पर रोक लगाने संबंधी आदेश केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय और यमुना राज्यों को दिए हैं।

एनजीटी ने एक समाचार रिपोर्ट के आधार पर मामले का स्वतः संज्ञान लिया। रिपोर्ट में यमुना नदी में पारंपरिक देशी मछलियों की संख्या में लगातार गिरावट और विदेशी प्रजातियों के तेजी से फैलने की ओर इशारा किया गया था। एनजीटी के चेयरमैन और जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव और एक्सपर्ट मेंबर डॉ. ए. सेनथिल वेल की अध्यक्षता वाली पीठ ने एक सर्वे पर गौर किया कि यमुना नदी के अत्यधिक प्रदूषित स्थलों में विदेशी प्रजातियों की मछलियों की संख्या में तेजी से प्रसार हो रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), प्रयागराज द्वारा वर्ष 2020 से 2024 के बीच किए गए सर्वेक्षण में यमुना नदी में कुल 126 मछली प्रजातियों की पहचान की गई थी। इसमें कटला, रोहू, महासीर और ईल जैसी देशी मछलियों की आबादी में लगातार गिरावट दर्ज की गई है, जबकि इसके विपरीत नदी में जहां प्रदूषण ज्यादा है वहां कॉमन कार्प, नाइल टिलापिया और थाई मांगुर जैसी विदेशी प्रजातियां तेजी से बढ़ रही हैं। विशेषज्ञों ने इसके लिए जल प्रदूषण, बांधों का निर्माण, नदी के प्राकृतिक आवास में बदलाव, अत्यधिक मछली पकड़ना और जलवायु परिवर्तन को प्रमुख कारण बताया है।

एनजीटी के प्रमुख निर्देश ट्रिब्यूनल ने यमुना बेसिन से जुड़े राज्यों और केंद्रीय एजेंसियों को समन्वित कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। एनजीटी ने कहा है कि उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश की राज्य सरकारें आईसीएआर-सीआईएफआरआई की सिफारिशों को लागू करें। वहीं, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी), राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) और दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) यह सुनिश्चित करें कि अपशिष्ट जल मानकों का कड़ाई से पालन हो और मछलियों के अनुकूल जल गुणवत्ता बनी रहे।

ट्रिब्यूनल ने अपने आदेश में कहा है, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और केंद्रीय जल आयोग नदी में न्यूनतम पर्यावरणीय प्रवाह बनाए रखें व अनावश्यक अवरोधों को हटाएं और मछलियों के प्राकृतिक प्रवास को सुनिश्चित करें। पीठ ने कहा कि राज्य मत्स्य पालन विभाग देशी मछलियों के बीज छोड़ने, हैचरी स्थापित करने और मत्स्य पालन गतिविधियों को नियंत्रित करने के साथ-साथ विदेशी प्रजातियों के पालन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाएं। इसके अलावा विदेशी प्रजातियों से पारिस्थितिकी को होने वाले नुकसान को लेकर अनुसंधान और जन-जागरूकता कार्यक्रम मजबूत किए जाएं। एनजीटी ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि यमुना की पारिस्थितिकी सेहत केवल जल की स्वच्छता तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें देशी जैव विविधता की सुरक्षा और सतत मछली आबादी की बहाली भी उतनी ही आवश्यक है।

पेयजल लाईनों की मॉनीटरिंग की सुदृढ़ व्यवस्था सुनिश्चित की जायेगी

इंदौर सांसद श्री शंकर लालवानी की अध्यक्षता में जिला विकास और निगरानी समिति (दिशा) की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रमुख रूप से शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जल आपूर्ति और अमृत योजना से जुड़े कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में तय किया गया कि इंदौर में ड्रेनेज और पेयजल लाईनों की मॉनीटरिंग की सुदृढ़ व्यवस्था स्थापित की जायेगी। इसके तहत नई और पुरानी ड्रेनेज तथा पेयजल लाईनों की मॉनीटरिंग के लिये जीआईएस मेपिंग होगी। इससे यह सुनिश्चित किया जायेगा कि ड्रेनेज और पेयजल लाईन के पानी आपस में नहीं मिले। दोनों लाइनें आसपास समानांतरण रूप से नहीं रहे।

बैठक में महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीना सतीश मालवीय, कलेक्टर श्री शिवम वर्मा, नगर निगम आयुक्त श्री क्षितिज सिंघल, विधायक श्री रमेश मेंदोला तथा श्री मधु वर्मा, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री नवजीवन ?विजय पंवार, अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी और श्री श्रवण चावड़ा सहित समिति के अन्य सदस्यगण मौजूद थे। बैठक में शहरी क्षेत्र में अमृत योजना पैकेज-1 एवं अमृत योजना 2.0 के अंतर्गत चल रहे कार्यों की प्रगति पर चर्चा हुई। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र में जल जीवन मिशन के क्रियान्वयन पर भी चर्चा की गई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा अमृत योजना के तहत शुभारंभ के बाद किए जा रहे कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तथा पैकेज-1 में शेष कार्यों की समीक्षा कर आगामी कार्ययोजना पर विचार-विमर्श किया गया। सांसद श्री लालवानी ने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया कि अमृत योजना 2.0 के अंतर्गत डाली जा रही नई जल और ड्रेनेज लाइनों की जीआईएस मैपिंग अनिवार्य रूप से की जाए। उन्होंने बताया कि पोर्टल पर नई लाइनों की मैपिंग तो की जा रही है, लेकिन इससे भी अधिक जरूरी है कि पुरानी जल एवं ड्रेनेज लाइनों की भी मैपिंग कर उन्हें नई लाइनों के साथ सुपर इम्पोज किया जाए, ताकि भविष्य में किसी भी लाइन के टूटने या आपसी टकराव की स्थिति से बचा जा सके।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008